(ख) अनधिकृत मकान बनाने वालों पर न्यायालयों में अभियोग चलाये जा रहे हैं। न्यायालयों के निर्णय ज्ञात होने के पश्चात् इन मामलों का निपटारा किया जावेगा।

उत्तर प्रदेश में पर्यटन

५५७. { श्री भक्त दर्शन :
श्री स० चं० सामन्त :

क्या परिवहन तथा संचार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) बद्रीनाथ (उत्तर प्रदेश) की ओर विदेशी व स्थानीय पर्यटकों को अधिकाधिक संख्या में आकर्षित करने के लिये कौन से कदम उठाये गये हैं अथवा उठाने का विचार किया गया है; और

(ख) १९५७-५८ के वित्तीय वर्ष में इस कार्य के लिये कितनी धन-राशि स्वीकृत की गई ?

परिवहन तथा संचार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री राज बहादुर) : (क) और (ख). १९५४-५५ के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश सरकार को रुड़की-हरद्वार-बद्रीनाथ सड़क के सुधार के लिए ३३.७४ लाख रुपये का अनुदान दिया जा चुका है। यह पूंजी अनुमानित खर्च की दो तिहाई है। १९५६-५७ के अन्त तक राज्य सरकार से प्राप्त और केन्द्रीय सरकार द्वारा स्वीकृत प्राक्कलन कुल ५६.५४ लाख रुपये हैं। इस दिये गये अनुदान में से ३१.०३ लाख रुपये खर्च हो चुके हैं। शेष २.७१ लाख रुपये खर्च के प्राक्कलन राज्य सरकार से प्राप्त होने वाले हैं।

राज्य सरकार की योजना में हिमालय के तीर्थ-मार्गों में विश्राम-गृहों के लिए १०.०० लाख रुपये की व्यवस्था है। इस में से आधा खर्चा केन्द्रीय सरकार देगी। इस पूंजी के उपयोग के लिए राज्य सरकार द्वारा योजनाएं तैयार की जायेंगी।

केन्द्रीय सरकार से सहायता के रूप में राज्य सरकार को १९५७-५८ के अन्तर्गत १.०० लाख रुपये का अनुदान पांडु, केशवर, मुईधर, फुरकीया, विराही, गौना, लैक, धोसला, अमोरा, भल्ला, सुखी, धरारी, भैरोंघाटी, झाला, ग्वालदम, लोपकल और गंगोत्री में लकड़ी के कमरों को खड़ा करने के लिये दिया गया है। वास्तव में बद्रीनाथ के मार्ग पर किसी भी स्थान के निर्माण की व्यवस्था इसमें शामिल नहीं की गई—इस ओर उत्तर प्रदेश सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया है। राज्य सरकार की ओर से मिलाय के किसी अन्य यात्री-मार्ग पर लकड़ी के कमरे बनाने के लिए कोई भी प्रस्ताव केन्द्रीय सरकार के पास रुका नहीं पड़ा है। १९५५ में केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित "उत्तर भारत के पर्वतीय स्टेशन" नाम की पुस्तिका में बद्रीनाथ के आकर्षक पर्यटन—स्थान उल्लिखित हैं। यह प्रस्ताव है कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी उत्तरी भारत के तीर्थ-केन्द्रों पर, जिनमें बद्रीनाथ भी शामिल है, एक पुस्तिका प्रकाशित की जाय।

१९५७-५८ के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा खोले गये पर्यटन दफ्तरों के आंशिक खर्चे को पूरा करने के लिए ३५,००० रु० का एक अनुदान दिया गया है। एक ऐसा दफ्तर कोटद्वारा में स्थित है जहां से बद्रीनाथ के लिए एक मार्ग शुरू होता है।

Assam Rail Link

558. { Shri Heda:
Shrimati Mafida Ahmed:

Will the Minister of **Railways** be pleased to lay a statement showing:

(a) the number of occasions and the duration on each occasion in which through running of trains over the Assam link line remained suspended due to breaches during the monsoon period, *viz.*, April to September, 1957;

(b) the cost involved in restoring the lines;

(c) the loss of earnings due to the suspension of traffic;